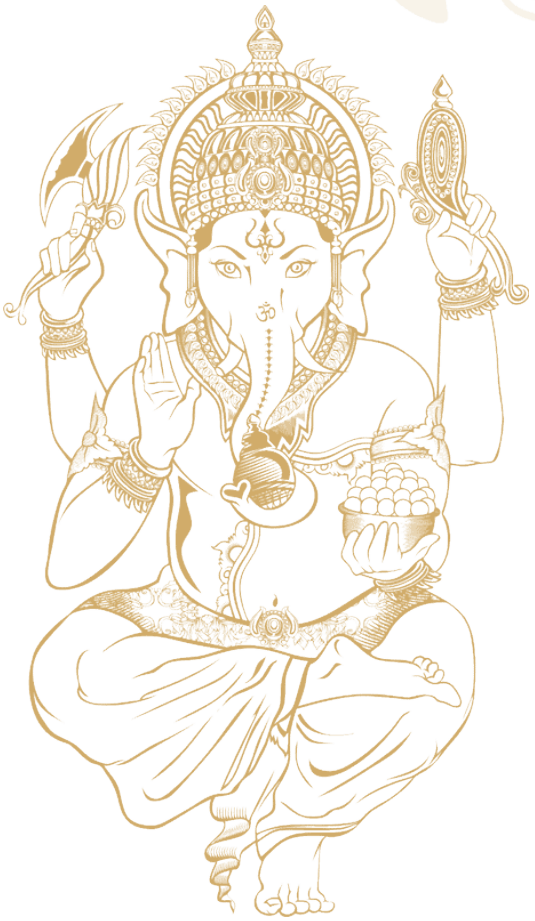

Vihanshi jain Gangwal

28 Jan 2026

11:39 AM

Ranchi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121587601**

तिथि 28/01/2026 **समय** 11:39:00 **वार** बुधवार **स्थान** Ranchi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:23
अक्षांश 23:22:00 उत्तर **रेखांश** 85:20:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	20:20:26 घं
वेलान्तर	00:12:54 घं
सूर्योदय	06:30:37 घं
सूर्यास्त	17:32:49 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	माघ
पक्ष	शुक्ल
तिथि	10
नक्षत्र	रोहिणी
योग	ब्रह्म
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ओ-ओमवती
पाया(रा.-न.)	रजत-स्वर्ण
होरा	सूर्य
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

चन्द्र 9वर्ष 0मा 2दि

चन्द्र

28/01/2026
31/01/2035

	28/01/2026
मंगल	01/07/2026
राहु	31/12/2027
गुरु	01/05/2029
शनि	01/12/2030
बुध	01/05/2032
केतु	30/11/2032
शुक्र	01/08/2034
सूर्य	31/01/2035

योगिनी

सिद्धा 6वर्ष 3मा 19दि

सिद्धा

28/01/2026
19/05/2032

सिद्धा	28/09/2026
संकटा	18/04/2028
मंगला	28/06/2028
पिंगला	17/11/2028
धान्या	18/06/2029
भ्रामरी	29/03/2030
भद्रिका	20/03/2031
उल्का	19/05/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			20:36:06	मेष	भरणी	3	शुक्र	गुरु	---	0:00			
सूर्य			14:06:02	मक	श्रवण	2	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि	1.58	मातृ	पितृ	जन्म
चंद्र			11:19:30	वृष	रोहिणी	1	चंद्र	मंगल	मूलत्रिकोण	1.01	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	09:34:37	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	उच्च राशि	1.11	ज्ञाति	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध		अ	18:40:51	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	सम राशि	1.10	भ्रातृ	ज्ञाति	जन्म
गुरु	व		23:34:06	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.37	आत्मा	धन	क्षेम
शुक्र		अ	19:15:20	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	मित्र राशि	1.05	अमात्य	कलत्र	जन्म
शनि			04:03:22	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	0.83	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		15:08:34	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		15:08:34	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

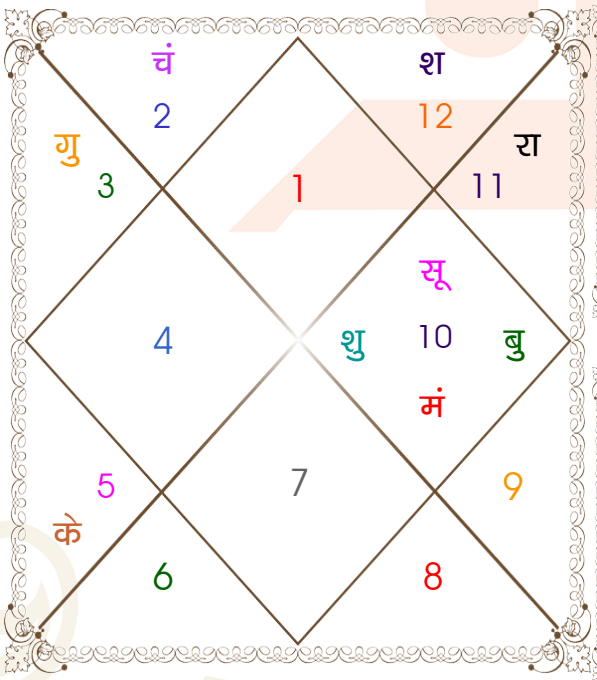

चन्द्र कुंडली

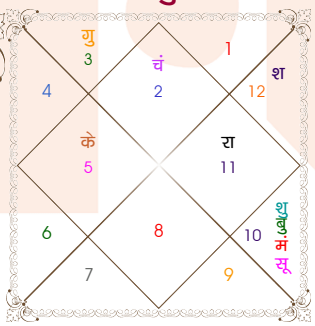

नवमांश कुंडली

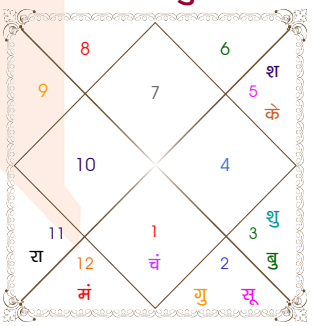

सर्वाष्टकवर्ग

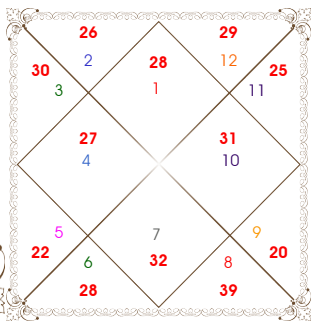

दशमांश कुंडली

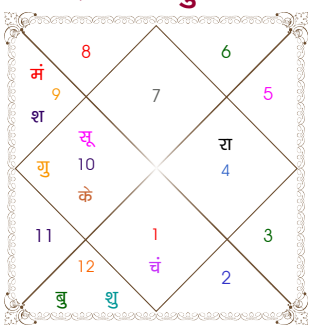

नक्षत्रफल

आप रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि सर्प, गण मनुष्य, वर्ण वैश्य, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग गरूड़ है। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम ओ अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा- ओमवती।

आप आस्तिक प्रवृति की महिला होंगी तथा भगवान पर आपकी पूर्ण आस्था होगी। सारे धर्म संम्बधी कार्यों की आपको जानकारी होगी तथा नियम पूर्वक उन कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप देखने में सुन्दर दर्शनीय तथा स्वभाव से सरल एवं सुन्दर होंगी। बोलने में अति चतुर होंगी। किसी भी बात का तत्काल सार्थक उत्तर देने में आप दक्ष होंगी। आप बुद्धिमती होंगी तथा कठिन से कठिन विषयों को भी स्पष्ट रूप से अन्य जनों को समझाने की कला में सक्षम रहेंगी।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

आपको जीवन पर्यन्त धन का उपयोग करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। कृतज्ञता के गुण से आप सुशोभित रहेगी। यदि कोई व्यक्ति आपकी थोड़ी सी भी भलाई करेगा तो आप दिल से उसका अहसान मानेंगी। राज्यमंत्री या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपकी प्रिय एवं मधुर वाणी होगी जिसे सुनकर अन्य लोग प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। आप हमेशा सत्य का अनुसरण करेंगी तथा उसी के अनुसार आचरण भी करेंगी।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ रहेंगी। रोगग्रस्त कम ही रहेंगी। आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगी। उत्साह के साथ उसे सम्पन्न करेंगी। आपका आचरण तथा चाल चलन उत्तम रहेगा।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

आप हमेशा शारीरिक तथा आत्मिक शुद्धता का पालन करेंगी। आपके दृष्टिकोण से शरीर की तरह आत्मा को शुद्ध एवं पवित्र रखा जाना चाहिए। इसके लिए आप आजीवन प्रयत्नशील रहेंगी। आपकी बुद्धि स्थिर होगी। अतः आप जो भी कार्य सम्पन्न करेंगी चंचलता को छोड़कर एकाग्रचित्त से पूर्ण करेंगी।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

देखने में आपका शरीर स्वस्थ रहेगा तथा आप दूसरे लोगों के दोषों के बारे में शीघ्र ही जानने वाली होंगी।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

आप रजत पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः जीवन में आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा कभी भी इसके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। साथ ही जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को आप अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दानशीलता के भाव से नित्य युक्त रहेंगी। साथ ही आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में शीघ्र ही इच्छित सफलता प्राप्त होगी। शरीर से आप अत्यन्त ही कान्ति युक्त रहेंगी तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी। समाज में आप आदरणीय तथा श्रद्धेय महिला समझी जाएंगी। आप का परिवार भी विस्तृत रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। विद्याध्ययन के क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित करने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त आप प्रायः अल्प मात्रा में बोलना ही पसन्द करेंगी।

आप वृष राशि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपका वर्ण लालिमा युक्त गौर्ण तथा गाल स्थूल होंगे। आपकी आँखें बड़ी-बड़ी तथा मोटी होंगी। आप स्वभाव से आलसी प्रकृति की भी होंगी। उत्तम कुल में जन्मे लोगों की आप श्रद्धा पूर्वक सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहेगी।

गुरु तथा ब्राहमण वर्ग की आप अत्यन्त ही आज्ञाकारिणी होंगी। तथा उनके प्रति आपके मन में हमेशा श्रद्धा एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा। आपकी प्रकृति कफ तथा वात दोनों से युक्त होगी। आप बुद्धिमती होंगी। अतः सारे कार्य बुद्धिमता पूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगी। आपके बाल घने तथा घुँघराले होंगे। आप दानशील प्रवृति की होंगी तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करेंगी।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप अपने जीवन में दानशीलता की प्रवृति वाली रहेंगी तथा समस्त सुखों का आनन्द पूर्वक उपभोग करेंगी। शुद्धता तथा सफाई पर आप विशेष रूप से ध्यान देंगी तथा समस्त कार्यो को सम्पन्न करने में आप चतुर होंगी। आप बुद्धिमती तथा बलवती होंगी। आपके पास धनार्जन पर्याप्त मात्रा में रहेगा। अतः आपकी प्रवृति भी विलासी हो जाएगी। समस्त भौतिक सुख साधनों पर आप दिल खोलकर व्यय करेंगी। आप चेहरे से तेजस्वी परिलक्षित होगी। आपकी मित्रता अच्छे तथा सद्गुणों से युक्त मित्रों से होगी जो दीर्घकाल तक चलेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपके चेहरे तथा जानु का आकार दीर्घ होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग सुख तथा कष्ट से व्यतीत होंगे। तथा अन्तिम दो भाग आनन्द तथा सुख पूर्वक व्यतीत होंगे। आपकी रूचि पुरूषों के प्रति अधिक रहेगी। त्याग की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी जिसका जीवन में आप समयानुसार प्रदर्शन करती रहेंगी। आपकी प्रकृति क्षमाशील होगी तथा किसी व्यक्ति को उसके अपराध या गलती के लिए आप उसे क्षमा कर देंगी। प्रारम्भिक अवस्था में आपको कष्टानाभूति होगी तथा परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा। आपकी पीठ चेहरे या बगल में तिल, मस्सा या व्रण का चिन्ह भी हो सकता है।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी सन्तति में कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी तथा आचरण एवं व्यवहार श्रेष्ठ रहेगा। सभी आपकी प्रशंसा करेंगे। धन एवं ऐश्वर्य का उपभोग करती हुई आपकी कीर्ति दूर-दूर तक फैलेगी।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आपका वक्षस्थल विशाल तथा विस्तृत होगा तथा प्रवृति में कामवासना की प्रधानता होगी। आपका यश चारों तरफ व्याप्त रहेगा। आप दूध का दूध तथा पानी का पानी अलग करने में चतुर होंगी। तथा शुद्धाशुद्ध या विवेक अविवेक का आपको पूर्ण ज्ञान होगा। चाल आपकी सुन्दर तथा दर्शनीय होगी।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप शनैः शनैः चलना पसन्द करेंगी तथा अपने सम्पूर्ण कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपके मन में दूसरों की भलाई करने की भावना नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी तथा इस भावना का पालन आप आजीवन करेगी। इसी प्रकार अपने सत्कार्यों तथा पुण्य कार्यों के प्रभाव से अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप देखने में अत्यन्त ही सुन्दर तथा दर्शनीय होगा तथा मुखाकृति थोड़ी दीर्घ होगी। आप सविलास गमन प्रिय प्रवृति की होंगी। कष्टों के सहन करने में आप सफल होंगी तथा एक अधिकार सम्पन्न समृद्ध महिला बनेंगी। आप के पेट में जठराग्नि की प्रबलता रहेगी। साथ ही आप युवा तथा वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप सुशील तथा भगवान विष्णु एवं शंकर की आराधना करने वाली भी होंगी।

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी प्रवृति धार्मिक होगी। ब्राहमण तथा देवताओं में आपकी पूर्ण श्रद्धा होगी। देवताओं की आप भक्ति पूर्वक पूजा करेंगी। आपके अन्दर अभिमान की भावना रहेगी। आप आजीवन धन से परिपूर्ण रहेंगी तथा धन अभाव कभी भी आपको प्रतीत नहीं होगा। आपका हृदय दया तथा करुणा के भाव से भी युक्त रहेगा। फलतः आप दीन दुखियों की यत्न से सेवा तथा सहायता करेंगी। आप एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं की जानने वाली होंगी। ज्ञान प्राप्त करने में भी आपकी रूचि जागृत रहेगी। आपका

शरीर कान्ति से युक्त रहेगा तथा आप बहुत से लोगों को सुख प्रदान करने वाली होंगी।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आप जीवन पर्यन्त मान सम्मान तथा धन से युक्त रहेंगी। साथ ही आप एक अच्छी निशानेबाज भी बन सकती हैं। आपके शरीर का वर्ण गौर वर्ण होगा। आप किसी नगर की सम्माननीया पदाधिकारी या नेता हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त आपके नेत्र आकार में बड़े-बड़े होंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आपका जन्म सर्प योनि में होने से कभी कभी आपके अन्दर क्रोध की मात्रा बहुत अधिक होगी। क्रोधावस्था में आपको स्वयं के भले बुरे का ज्ञान नहीं रहेगा। आप चंचल प्रकृति की होंगी तथा जीभ आपकी अत्यन्त ही स्वाद लोलुप होगी। अर्थात् आपको चटपटी चींजें खाने का शौक अधिक रहेगा।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्याध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग, शकुनि करण, शनिवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि का चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होते हैं। अतः आपको चाहिए कि 15 नवम्वर से 14 दिसम्वर के मध्य हस्त नक्षत्र सुकर्मा योग, शकुनि करण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिमार्ण, क्रय विक्रय लेन देन आदि इस समय पर न करें अन्यथा आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही अनावश्यक हानि से बचने के लिए शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में वर्जित रखें तथा इस समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।

जब समय आपके अनुकूल न चल रहा हो जैसे व्यापार में हानि हो रही हो नौकरी नहीं लग रही हो या उन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो एसे समय में आपको नियमित रूप से सन्तोषी माता के व्रत करने चाहिए तथा श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, शहद, कपूर, श्वेत पुष्पादि पदार्थो का दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आपको शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप करने या करवाने चाहिए। श्रद्धानुसार आप भगवान शिव या विष्णु की आराधना भी कर सकती हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।